द्वारा लिखित मैक्सन मैसी
शुक्रवार, 25 सितम्बर 2009 12:58 - अंतिम अद्यतन गुरुवार, 29 अक्टूबर 2009 15:18

□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□

मैं अपनी संस्था एवं अपने स्वयं के कार्यों से, बहुत यात्रा करता हूं। कभी-कभी महीने में 20 दिन भी यात्रा में करनी पड़ जाती हैं। यात्रा चाहे हवाई जहाज़ की हो या रेल या सड़क की हो, यात्राओं का अनुभव अलग ही होता है। आज आपसे मैं अपनी ऐसी ही एक यात्रा के बारे में बात करना चाहता हूं।

1993 के अंत की घटना है। हैदराबाद में मशिन की एक मीटिंग थी। संस्था की ओर से श्री आर.डी. लाल, राजेश सिंग और मुझे वहां अवश्य उपस्थित होना था। आपको शायद मालूम हो कि दमोह से हैदराबाद कोई भी ट्रेन नहीं जाती, अत: आसपास बड़े शहरों से यह कोशिश की गई कि ट्रेन में रिज़र्वेशन हो सके, परन्तु समय कम होने के कारण किसी भी ट्रेन में रिज़र्वेशन नहीं मिला और हम लोगों को कार के द्वारा दमोह से हैदराबाद जाना पड़ा। वैसे हम तीनों कार चलाने का अनुभव रखते हैं, परन्तु दमोह से आदीलाबाद मैंने ही गाड़ी चलाई और यह लगभग 18 घंटे का सफ़र था। रात के 3 बज चुके थे और अचानक मेरे मन में आया कि कहीं 2 घंटे रूक जाना चाहिए। मेरे साथी इस बात के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थे, क्योंकि मात्र 3-4 घंटे का सफ़र और बचा था और वे हैदराबाद पहुंचकर ही आराम करना चाहते थे परन्तु मैं बच्चों के समान रूकने के लिए ज़िद करने लगा। इस पर श्री आर.डी. लाल गुस्सा हुए, गुस्से में ही वे बोले कि अगला कोई ढाबा आता है, रूक जाना और हम लोगों ने 2 घंटे ढाबे में आराम किया। सुबह का 5 बज चुका था। हम लोग मुश्किल से 2 या 3 किलोमीटर पहुंचे ही थे तो तीन ट्रकों को आग से जलते पाया। हम लोगों ने रूककर पूछा तो पता चला कि अभी मात्र 2 घंटे पहले नक्सलवादियों ने यह ट्रक जलाये हैं। उसी समय हम लोगों ने यह अनुभव किया प्रभु यीशु मसीह हर समय, हर पल हमारे साथ होता है। हमारे लिए उस रात रूकने का कोई ख़ास कारण नहीं था, पर प्रभु यीशु मसीह हमारी आत्माओं में काम करता है। यदि हम न रूकते तो हमारा परिणाम भी शायद उन ट्रकों से हटकर कुछ ज़्यादा नहीं होता।

स्व. डॉ. विजय लाल, अक्सर हम लोगों से कहा करते थे कि जीवन की यात्राओं में प्रतिदिन ईश्वर हमारे साथ-साथ चलता है अत: घर वापस आने पर यात्राओं की सुरक्षा के लिए ईश्वर को धन्यवाद देना मत भूलो। बहुधा मैं, सड़क से दिल्ली की ओर यात्रा करता हूं और रास्ते में कई प्रकार की दुर्घटनाओं के दृश्य देखने को मिलते हैं, टूटे हुए ट्रक, कारें, लावारिस लाशें देखने को मिलती हैं और तब अनायास ही मन में ईश्वर के प्रति धन्यवाद के शब्द गूंज उठते हैं। अभी पिछले कुछ समय पुरानी बात है मैं और श्री आर.डी. लाल, राजेश सिंग संस्था के कार्य हेतु जबलपुर जा रहे रास्ते में एक गांव के समीप एक 5 वर्ष का बालक अचानक मेरी कार के सामने आ गया। मैंने भरपूर ब्रेक लगाया, घिसटते टायरों की आवाज़ और कार एक झटके के साथ रूक गई। सामने बालक गिरा पड़ा था, पर जब हमने उतर कर देखा तो पाया कि कार के टायर और बच्चे के बीच केवल 6 इंच की दूरी बची थी, बच्चा घबराहट में ही गिर गया था उसे किसी प्रकार की चोट तक नहीं आयी थी। मैं नहीं जानता वह कैसे बचा, परन्तु मैंने ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव उसी समय अपने जीवन में किया। ऐसे न जाने कितने अनुभव होते हैं, जिनका हम अपने प्रतिदिन के जीवन में अहसास करते हैं। मैं उस महान पिता परमेश्वर की महिमा और स्तुति करता हूं कि जीवन-यात्राओं में, आज दिन तक की यात्राओं में उसने मुझे अपनी सुरक्षा प्रदान की। आपके जीवनों में भी अवश्य उसने इस प्रकार के अनेकों छोटे-छोटे लगने वाले परन्तु महत्वपूर्ण आश्चर्यकर्म किये होंगे। आप भी अपने जीवन की प्रतिदिन की यात्रा में उसे धन्यवाद देना न भूलें।

□□□□□□□□ □□□□□, □□□□□ (□.□□□.)